भावजागृति हेतु साधना : खण्ड १

भावके प्रकार एवं जागृति

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

परात्पर गुरु डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

(‘सन्तपद’ अथवा ‘गुरुपद’ अर्थात ७० प्रतिशत, ‘सद्‌गुरुपद’ अर्थात ८० प्रतिशत, ‘परात्पर गुरुपद’ अर्थात ९० प्रतिशत, ‘ईश्वर’ अर्थात १०० प्रतिशत आध्यात्मिक स्तर !)

सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्ता

श्रीचित्‌शक्ति (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळ,

कु. मधुरा भिकाजी भोसले एवं अन्य

सनातन संस्था

सनातनकी ग्रन्थसम्पदाकी अद्वितीयता !

सनातनके अधिकांश ग्रन्थोंमें प्रकाशित लगभग २० प्रतिशत भाग ‘सूक्ष्मसे प्राप्त दिव्य ज्ञान’ है एवं वह पृथ्वीपर उपलब्ध ज्ञानकी तुलनामें अनोखा है !

विषयसूची

१. संकलनकर्ता एवं सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्त्री साधिकाओंका परिचय ५

२. सनातनके ग्रन्थोंमें प्रयुक्त संस्कृतनिष्ठ हिन्दीकी कारणमीमांसा ७

३. संस्कृतनिष्ठ हिन्दीके प्रयोग हेतु सनातनकी समर्थक भूमिका ८

४. आध्यात्मिक परिभाषामें विशेषतापूर्ण प्रस्तावना ९

५. 'भावजागृतिके लिए साधना' ग्रन्थमाला एवं प्रस्तुत ग्रन्थकी भूमिका १२

अनुक्रमणिका

१. 'भाव' शब्दकी व्युत्पत्ति एवं अर्थ १४

२. 'भाव' शब्दकी परिभाषा १४

३. भावके घटक ४. भावकी विशेषताएं १५

५. भावका महत्त्व २०

६. भावके अनुसार परिणाम २६

७. भावके लाभ ८. भावके प्रकार ३०

९. किसी व्यक्तिमें 'भाव है' यह कैसे पहचानें ? ७४

१०. भाव बढानेकी प्रक्रियाके सन्दर्भमें चरण ७५

११. भावनिर्मिति ७५

१२. भावावस्था एवं भावातीत अवस्था ८३

१३. भाव तथा अन्य ८५

१४. भाव एवं अनुभूतियां ९५

१५. सनातनके साधक एवं भाव १००

विषयसूची अन्तर्गत क्रमांक १

ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजीके अद्वितीय कार्य एवं विशेषताओं का संक्षिप्त परिचय !

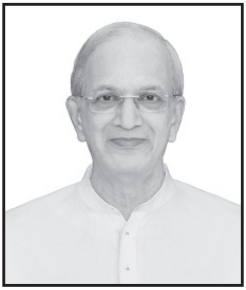

१. अंतरराष्ट्रीय ख्यातिके सम्मोहन-उपचार विशेषज्ञ (वर्ष १९७८ से वर्ष १९९५)

२. अध्यात्मप्रसार हेतु 'सनातन संस्था'की स्थापना

३. हिन्दू राष्ट्रकी (ईश्वरीय राज्यकी) (टिप्पणी) स्थापनाकी उद्घोषणा व कार्यारम्भ (वर्ष १९९८)

[टिप्पणी : हिन्दू राष्ट्र (ईश्वरीय राज्य) - हीनान् गुणान् दूषयति इति हिन्दुः ।' अर्थात जो 'कनिष्ठ, हीन, रज एवं तम गुणोंका नाश करता है वह हिन्दू है ।' ऐसे सात्त्विक लोगोंका राष्ट्र अर्थात 'हिन्दू राष्ट्र' ।]

४. गुरुकुलसमान 'सनातन आश्रम'की निर्मिति

५. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्गकी निर्मिति : १.५.२०२२ तक गुरुकृपायोगानुसार साधनासे १२१ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,१२१ साधक सन्तत्वकी दिशामें अग्रसर हैं ।

६. देवता, साधना, आचारधर्मपालन, आदर्श राष्ट्ररक्षा, धर्मरक्षा आदि विविध विषयोंपर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति एवं ग्रन्थ-प्रकाशन

७. अनिष्ट शक्तियोंके सन्दर्भमें शोध एवं शारीरिक, मानसिक तथा अनिष्ट शक्तियोंकी पीडाओंकी उपचार-पद्धतियोंके विषयमें शोध

८. अपनी देह तथा उपयोगकी वस्तुओंमें हो रहे दैवी परिवर्तनों सम्बन्धी शोधकार्य और अपने महामृत्युयोगका शोधकार्यकी दृष्टिसे अध्ययन

९. 'ईश्वरप्राप्ति हेतु कला' एवं कलाके सात्त्विक प्रस्तुतीकरण संबंधी शोध

१०. आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिसे मूल्यवान सहस्रों वस्तुओंका संरक्षण

११. १.५.२०२२ तक २ बालक-सन्तोंको, तथा ६० प्रतिशतसे अधिक आध्यात्मिक स्तर प्राप्त २४३ और अन्य ९१९ दैवी बालकोंको समाजसे परिचित करवाया । दैवी बालकोंके विषयमें शोध-कार्य भी जारी है ।

१२. प्रखर हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात'के संस्थापक-संपादक

१३. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्रकी (ईश्वरीय राज्यकी) स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ, देशभक्त एवं सामाजिक कार्यकर्ताओंका संगठन एवं उन्हें आध्यात्मिक स्तरपर दिशादर्शन

१४. भीषण आपातकालका विचार द्रष्टापनसे अनेक वर्ष पहले ही कर आपातकालमें प्राणरक्षा हेतु आवश्यक विविध समाधान-योजनाओंके विषयमें ग्रन्थ, नियतकालिक, जालस्थल आदि माध्यमोंद्वारा मार्गदर्शन

(सम्पूर्ण परिचय देखें - 'www.Sanatan.org')

सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्त्री साधिकाओंका परिचय !

श्रीचित्‌शक्ति (श्रीमती) अंजली गाडगीळ (M.Sc.)

आप परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीकी एक आध्यात्मिक उत्तराधिकारिणी हैं । आप सूक्ष्मसे ज्ञान प्राप्त करती हैं । अध्यात्म, कला आदि क्षेत्रोंके ज्ञानियोंसे ज्ञानार्जन करने और आध्यात्मिक दृष्टिसे मूल्यवान सहस्रों वस्तुओंका संरक्षण करने के लिए अनवरत भारतभ्रमण करती हैं ।

कु. मधुरा भिकाजी भोसले

आप इस पृथ्वीपर अन्यत्र अनुपलब्ध अध्यात्मके विविध विषयोंपर गहन शास्त्रीय ज्ञान सूक्ष्मसे प्राप्त करती हैं । आप धार्मिक विधि, यज्ञयाग आदि का सूक्ष्म-परीक्षण भी करती हैं । दिसम्बर २०१८ में आपने ६१ प्रतिशत आध्यात्मिक स्तर प्राप्त किया है ।

विषयसूची अन्तर्गत क्रमांक ५

— 'भावजागृतिके लिए साधना' ग्रन्थमालाकी भूमिका —

हे नाथ आपके चरणोंके प्रति जिसका जैसा भाव रहता है, उसीके अनुसार वह आपके स्वरूपको पहचानकर आपतक पहुंच सकता है ॥ ऐसे भावका महत्त्व हमारे गुरु प.पू. भक्तराज महाराजजीने वर्णित किया है । ईश्वरके सगुण तत्त्वकी उपासना करनेवाले साधकका सगुणसे निर्गुणकी ओर जानेकी, अर्थात अद्वैत तककी यात्रा भावके कारण ही सम्भव हो पाती है । साधकके आध्यात्मिक जीवनमें भावका ऐसा अनन्य साधारण महत्त्व होते हुए भी साधना करनेवालोंमें अधिकांश को भाव निश्चित रूपसे क्या है, भावके लक्षण क्या हैं, भावके प्रकार कितने हैं, भाव जागृत करने हेतु क्या प्रयत्न करने चाहिए, भावजागृतिके कौनसे चरण हैं, आदिकी जानकारी नहीं होती । यह जानकारी जिज्ञासु एवं साधकोंको प्राप्त हो, इसलिए 'भावजागृतिके लिए साधना', इस ग्रन्थमालाका प्रयोजन किया गया है ।

प्रस्तुत ग्रन्थकी भूमिका

'भाव' शब्दके सन्दर्भमें, देवता अथवा गुरुके प्रति प्रकट सगुण भाव, इतना ही सीमित अर्थ अधिकांश लोगोंको ज्ञात होता है । निर्गुण तत्त्वकी प्राप्ति करवानेवाले भाव विशिष्ट स्तरानुसार विविध प्रकारके होते हैं । इनका अध्ययन करनेपर भावजागृति हेतु प्रयत्न करनेके सन्दर्भमें एक नई दृष्टि मिलती है । इस अनुषंगसे प्रस्तुत ग्रन्थ मार्गदर्शक है । इस ग्रन्थमें व्यष्टि एवं समष्टि भाव, व्यक्त एवं अव्यक्त भाव, कृतज्ञता एवं शरणागत भाव, इस प्रकार भावके विविध प्रकार तथा उनका मनुष्यपर तथा उसकी साधनापर होनेवाले परिणामोंकी जानकारी दी है । साथ ही भाव कैसे पहचानें, साधनामें शीघ्र उन्नति हेतु तीव्र उत्कण्ठा एवं भावका समायोजन क्यों आवश्यक है, भाववृद्धि हेतु किए जानेवाले प्रयत्न, भावानुसार साधकके आस-पास रहनेवाले चैतन्यकणोंके कवचका रंग आदि अनेक

卐 —— 卐

नवीनतम पहलू स्पष्ट किए हैं । ‘विचार एवं भावनामें परिवर्तन करनेसे कृत्यमें सुधार होता है तथा कृत्यमें परिवर्तन करनेसे विचार एवं भावनामें सुधार होता है’, इस तत्त्वानुसार भाव निर्माण होनेके लिए मन एवं बुद्धि के स्तरपर निरन्तर कृत्य करते रहनेसे भावजागृति निश्चित ही होती है । भावजागृतिके प्रयत्न आरम्भ कर अन्तमें भावातीत अवस्थाकी प्राप्तिके विषयमें मार्गदर्शन भी इस ग्रन्थमें मिलेगा ।

यद्यपि ईश्वरीय कृपासे सनातनके साधकोंको प्राप्त यह ज्ञान प्रगत होनेके कारण इसे समझना कुछ कठिन है, तथापि जिज्ञासा एवं उत्कण्ठा से युक्त प्राथमिक अवस्थाके साधकके लिए भी इसे समझना सम्भव है ।

श्रीगुरुचरणोंमें यही प्रार्थना है कि अपनी भाववृद्धि कर प्रत्येक व्यक्ति इस ग्रन्थके ज्ञानका उपयोग ईश्वरप्राप्तिके लिए कर पाए । – **संकलनकर्ता**

卐 —— 卐

परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीकी आध्यात्मिक उत्तराधिकारिणी श्रीमती बिंदा सिंगबाळजी एवं श्रीमती अंजली गाडगीळजी के नामके आगे विशिष्ट आध्यात्मिक उपाधि लगानेका कारण

नाडीपट्टिका-वाचनद्वारा (नाडीभविष्यद्वारा) सप्तर्षि सनातनका मार्गदर्शन करते हैं । १३.५.२०२० को उन्होंने बताया, ‘अबसे सद्‌गुरु (श्रीमती) बिंदा सिंगबाळजीको ‘श्रीसत्‌शक्ति (श्रीमती) बिंदा सिंगबाळजी’ एवं सद्‌गुरु (श्रीमती) अंजली गाडगीळजीको ‘श्रीचित्‌शक्ति (श्रीमती) अंजली गाडगीळजी’ सम्बोधित करें; क्योंकि इन नामोंसे दोनोंको देवीतत्त्व मिलेगा, तथा इसका लाभ उनके नामोंका उल्लेख करनेवालोंको भी होगा।’ सप्तर्षियोंकी आज्ञासे उन्हें इस प्रकार सम्बोधित करना आरम्भ किया है । इनके नामके सम्बोधनके विषयमें परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीने कहा, ‘‘ ‘श्रीसत्‌शक्ति’ भगवानके शाश्वत स्वरूपसे सम्बन्धित है एवं ‘श्रीचित्‌शक्ति’ भगवानके वैश्विक ज्ञानसे सम्बन्धित है ।’’